जिन खोजा तिन पाइयां

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मोती प्राप्त करने के लिए मानव को समुद्र की गहराई में जाकर उसे ढूंढना पड़ता है। समुद्र के अन्दर अनेक घातक जीव रहते हैं, जो मानव को पलक झपकते ही अपना निवाला बना सकते हैं। समुद्र से सुरक्षित निकल आये तो गोताखोर मोती को प्राप्त कर लेते हैं। इसी प्रकार किसी भी ऊंचे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मानव को प्राण का भय भी रहता है और वस्तु के प्राप्त हो जाने पर मालामाल हो जाने का सौभाग्य भी प्राप्त रहता है। अतः बिना जोखिम के ऊंचे लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता। जो लोग प्राण जाने के भय से डरकर समुद्र के किनारे बैठे रहते हैं या किसी भी प्रकार का रिस्क नहीं लेते सफलता उनसे कोसों दूर रहती है।

जीवन के हर क्षेत्र में इसे आजमाकर देखा जा सकता है। विद्यार्थी जब प्रतियोगात्मक परीक्षा की तैयारी के लिए अपना सबकुछ न्यौछावर कर संलग्न हो जाते हैं तो उनके सामने यही उक्ति रहती है। यदि वे परीक्षा में सफल हो गये तो जीवनभर आनन्द ही आनन्द है और यदि परीक्षा में सफलता नहीं मिली तो जीवन कष्टप्रद रह सकता है। मनुष्य को किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ता है। यदि परिश्रम सार्थक दिशा में होता है तो सफलता अवश्यंभावी है। यदि किसी कारणवश सफलता न भी मिले तो यह देखना चाहिए कि हमारे परिश्रम में क्या कमी रह गयी। लक्ष्य का निर्धारण करते समय मानव को अपनी शक्ति और संकल्प पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिए, उसे निराश नहीं होना चाहिए। मानव जीवन पृथ्वी के सम्पूर्ण जीव योनियों में सर्वश्रेष्ठ है। मानव जीवन सुकर्म करने से प्राप्त होता है। अतः सदाचार पूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहिए।

जिस प्रकार से बाह्य जगत है, वैसे ही मानव का आंतरिक जगत भी है। मानव का आन्तरिक जगत् आत्मतत्व प्रधान है। आत्मा सर्वज्ञाता है, उसका ज्ञान सर्वव्यापक है। किन्तु वह दिखायी

नहीं देता, केवल उसकी प्रतीति होती है। योगी लोग आत्मतत्व को अपने योग के द्वारा जान लेते हैं और परोक्ष रूप से उसका दर्शन भी कर लेते हैं। चर्म चक्षुओं से केवल बाह्य संसार दिखायी देता है। स्थूल से स्थूल को ही देखा जा सकता है, सूक्ष्म को नहीं देखा जा सकता। जिसकी अन्तःप्रज्ञा जागृत होती है केवल वहीं उस सूक्ष्म तत्व को जान सकता है और देख सकता है।

द्रौपदी के स्वयंवर की कथा इस संबंध में विचारणीय है। जिस समय द्रौपदी का स्वयंवर रचा गया, उस समय देश–विदेश के बड़े–बड़े राजा महाराजा उपस्थित हुए। सब ने स्वयंवर के लिए जो शर्त रखी गयी थी, उसे पूरा करने का प्रयास किया। किन्तु सब का प्रयास निष्फल गया। धनुर्धर अर्जुन भी स्वयंवर में उपस्थित थे। जब लक्ष्य भेदने के लिए अर्जुन गये तो अर्जुन से पूछा गया कि इस समय क्या देख रहे हो। अर्जुन ने कहा कि मैं इस समय मछली की आंख देख रहा हूं जिसे वाण से भेदना है। सभी योद्धाओं ने इस प्रश्न का यह उत्तर दिया था कि मैं मछली को देख रहा हूं। सभी योद्धाओं के उत्तर और अर्जुन के उत्तर में महान अन्तर दिखलायी देता है। जब मुकाबला प्रतिस्पर्धा पूर्ण हो तो लक्ष्य के प्रति सजगता बहुत आवश्यक है। अगर सभी राजाओं की तरह अर्जुन भी लक्ष्य के प्रति असावधान होते तो हो सकता है कि सफलता उनका वरण न करती। किन्तु अर्जुन लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पित होकर लक्ष्य का भेदन किये और लक्ष्य प्राप्ति में सफल रहे। इससे यह सिद्ध होता है कि सफलता प्राप्त करने के लिए पूर्ण मनोयोग से लक्ष्यबद्ध होना पड़ता है। तभी सफलता प्राप्त होती है।

सत्य के स्वरूप को समझने के लिए यह आवश्यक है कि इसके बाह्य स्वरूप और आंतरिक स्वरूप का परीक्षण किया जाये। एक है बाहर का सत्य, जिसे हम अपनी स्थूल आंखों से देखते हैं। एक ही वस्तु को कोई सत्य कहता है और कोई असत्य। कोई सत्य असत्य का मिथुनीकरण कर देता है। बाह्य सत्य पूर्ण सत्य नहीं होता। वस्तु का स्वरूप जिसको जैसा दिखाई देता है उसी रूप में वह सत्य को स्वीकार करता है। किन्तु आंतरिक सत्य एकसमान होता है। वहां सत्यं शिवं सून्दरम् की त्रिवेणी प्रवाहित होती है। सत्य व्यक्ति की समाज में प्रतिष्ठा होती है। न्यायालयों में न्यायाधीश सत्य का ही परीक्षण करता है। एक झूठ को छिपाने के लिये अनेक झूठ बोले जाते है। जिससे सत्य का स्वरूप ही छिप जाता है। सत्य की पहली

पाठशाला परिवार से शुरू होती है। जितनी गहराई में जाकर सत्य को खोजा जाता है उतना ही उसका स्वरूप स्पष्ट होता है। कबीरदास जी ने लिखा है–

जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ,

मैं बपुरा बूडन डरा रहा किनारे बैठ।।

सत्य हमारे अंदर रहता है और वाणी के द्वारा उसका व्यवहार किया जाता है। पहले चिंतन फिर मनन फिर वाणी का व्यवहार चिंतन व्यवहार से पहले होता है। जब आदमी आत्मा के स्तर पर जीवन व्यतीत करने लगता है तब वह सत्य भाषण करता है। आत्मा शाश्वत है और शरीर नश्वर। यही पूर्ण सत्य की खोज है। इसी सत्य को संत लोग खोजते है और अमर हो जाते हैं।